ठुमरी—यह गीत का वह प्रकार है जिसमें राग की शुद्धता की तुलना में भाव और सौन्दर्य को अधिक महत्व दिया जाता है। इसकी प्रकृति चपल और द्रुत होती है। अतः यह खमाज, देश, तिलक कामोद, तिलग, पीलू, काफी, भैरवी, झिझोटी, जोगिया आदि ऐसे चपल रागों में गाई जाती है। इसके साथ दीपचन्दी अथवा जतताल बजाया जाता है। इसमें शब्द कम होते हैं और शब्दों का भाव विविध स्वर-समूहों द्वारा व्यक्त किया जाता है। ठुमरी शृङ्गार रस प्रधान होती है। इसमें मींड और कण का विशेष प्रयोग होता है। अन्तरा से स्थाई में आते समय कहरवा ताल में आ जाते हैं और विभिन्न प्रकार के सुन्दर बोल बनाते हैं। कुछ देर के बाद पुनः पूर्व ठेके और लय में आ जाते हैं। ठुमरी गायन उन्हीं व्यक्तियों के लिये उपयुक्त है जिनका कंठ मधुर और चपल होता है। बनारस, लखनऊ और पंजाब की ठुमरियाँ विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। ठुमरी गाते समय सुन्दरता के लिये विभिन्न रागों की छाया दिखाते हैं जो एक साधारण कार्य समझा जाता है। विद्वानों का ऐसा अनुमान है कि लखनऊ के अन्तिम नवाब वाजिदअली शाह 'अख्तर पिया' ने गीत के इस प्रकार को जन्म दिया। पंजाब अंग की ठुमरियों में कोमल तीव्र सभी बारहों स्वरों को मिलाकर छोटी-छोटी पेंचदार तानें प्रयोग करते हैं। बनारस अंग की ठुमरियों में द्रुत और पेंचदार स्वर-समूह प्रयोग नहीं किये जाते, बल्कि शब्दों की बढ़त धीरे-धीरे लोचदार स्वर-समूहों द्वारा करते हैं।

ठुमरी का एक और प्रकार है जो शब्द और लय प्रधान है। इसके शब्द अनुप्रासयुक्त होते हैं, जैसे छाई घटा छटा, बरसे तरसे नैना, जिया पिया बिना इत्यादि। कुछ ठुमरियाँ ताल चमत्कार प्रधान होती हैं जो सुनने में तीनताल की मालूम पड़ती हैं, किंतु वास्तव में झपताल या एक ताल में रहती हैं। ये केवल तबलियों से लड़ंत के लिये बनाई गई हैं।

बनारस की इस ठुमरी में वियोग व्यथा की पराकाष्ठा का अनुमान कीजिये।

तराना—गीत के इस प्रकार में नोम-तोम, तनन, ना दिर दिर, दानी तदानी आदि वर्ण होते हैं। तराना सभी रागों में तथा लगभग सभी तालों में गाया जाता है। इसकी गति थोड़ी-थोड़ी बढ़ाई जाती है और अन्त में उच्चतम स्थान पर पहुँचकर इसे समाप्त करते हैं। तराने का मुख्य उद्देश्य तैयारी, लयकारी और उच्चारण अभ्यास है। बहुधा गायक छोटे ख्याल के बाद तराना गाते हैं। कुछ तराने विलम्बित लय में भी पाये जाते हैं। कुछ में कहीं-कहीं तबला और पखावज के बोल तथा कुछ में फारसी के शब्द भी देखे गये हैं। तराना के आविष्कारक के विषय में कोई प्रमाण नहीं प्राप्त होता है। एक किंवदन्ती के अनुसार कहा जाता है कि मियाँ तानसेन ने अपनी लड़की के नाम पर इस शैली की रचना की थी। कुछ विद्वानों का यह कहना है कि तराना गत शैली की नकल है। नीचे बहार राग में एक तराना देखिये जो तीन ताल में निबद्ध है।

Jio 4G VoLTE 4G 5.4 K/s 8:20
airtel
संगीत की शैली और पध्दति में जबरदस्त परिवर्तन हुआ है।
प्रमुख संगीतकार -
भारतीय संगीत के इतिहास के महान संगीतकारों जैसे कि कालीदास, तानसेन, अमीर खुसरो आदि ने भारतीय संगीत की उन्नति में बहुत योगदान किया है जिसकी कीर्ति को पंडित रवि शंकर, भीमसेन गुरूराज जोशी, पंडित जसराज, प्रभा अत्रे, सुल्तान खान आदि जैसे संगीत प्रेमियों ने आज के युग में भी कायम रखा हुआ है।

कर्नाटक शैली -
भारतीय शास्त्रीय संगीत के दक्षिण भारतीय रूप को कर्नाटक संगीत के नाम से जाना जाता है और संगीत की इस शैली में कई वाद्यों को प्रयोग किया जाता है जैसे कि वायलिन, वीणा, मृंदगम आदि। कर्नाटक संगीत दक्षिण भारत के तमिलनाडु, केरल, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक रायों में प्रचलित है। कर्नाटक संगीत का विषय मुख्यत: धार्मिक भजन होते हैं। जिनमें हिन्दू देवी-देवताओं की स्तुति की जाती है। कर्नाटक शास्त्रीय शैली में रागों का गायन अधिक तेज और हिन्दुस्तानी शैली की तुलना में कम समय का होता है। त्यागराज, मुथुस्वामी दीक्षितार और श्यामा शास्त्री को कर्नाटक संगीत शैली की त्रिमूर्ति कहा जाता है, जबकि पुरंदर दास को अक्सर कर्नाटक शैली का पिता कहा जाता है। कर्नाटक शैली के विषयों में पूजा-अर्चना, मंदिरों का वर्णन, दार्शनिक चिंतन, नायक-नायिका वर्णन और देशभक्ति शामिल हैं।
शैली के प्रमुख रूप
कर्नाटक शैली के प्रमुख रूप इस प्रकार हैं-
(1.) वर्णम - इसके तीन मुख्य भाग 'पल्लवी', 'अनुपल्लवी' तथा 'मुक्तयीश्वर' होते हैं। वास्तव में इसकी तुलना हिन्दुस्तानी शैली की ठुमरी के साथ की जा सकती है।
(2.) जावाली - यह प्रेम प्रधान गीतों की शैली है। भरतनाट्यम के साथ इसे विशेष रूप से गाया जाता है। इसकी गति काफ़ी तीव्र होती है।
(3.) तिल्लाना - उत्तरी भारत में प्रचलित 'तराना' के समान ही कर्नाटक संगीत में तिल्लाना शैली होती है। यह भक्ति प्रधान गीतों की गायन शैली है।

कर्नाटक शास्त्रीय संगीत के प्रचारकों ने अपनी अनन्त रचनाओं के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में तरंगें पैदा कर दी हैं। अपनी इन्हीं रचनाओं के कारण उन्हें कई पुरस्कार और सम्मान प्रदान किए गए हैं और इस प्रकार वे इस क्षेत्र के कीर्ति स्तम्भ बन गए हैं। इस क्षेत्र के कुछ महान संगीतकारों के नाम इस प्रकार हैं- एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी, मदुरै मणि अय्यर, एम.एस. बालासुब्रह्मणयम आदि।

शेयर करें

Jio 4G VoLTE 4G airtel 0 K/s 8:20

संगीत की हिन्दुस्तानी शैली के निम्न रूप हैं-

(1.) ध्रुपद - यह गायन की प्राचीनतम एवं सर्वप्रमुख शैली है। ध्रुपद गायन शैली में ईश्वर व राजाओं का प्रशस्ति गान किया जाता है। इसमें बृजभाषा की प्रधानता होती है।

(2.) ख़्याल - यह हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की सबसे लोकप्रिय गायन शैली मानी जाती है। ख़्याल की विषय वस्तु राजस्तुति, नायिका वर्णन और श्रृंगार रस आदि होते हैं।

(3.) धमार - इसका गायन भारत के प्रमुख त्योहारों में से एक होली के अवसर पर होता है। धमार गायन में प्राय: भगवान श्रीकृष्ण और गोपियों के होली खेलने का वर्णन किया जाता है।

(4.) ठुमरी - ठुमरी गायन में नियमों की अधिक जटिलता नहीं दिखाई देती है। यह एक भाव प्रधान तथा चपल चाल वाला श्रृंगार प्रधान गीत है। इस शैली का जन्म अवध के नवाब वाजिदअली शाह के राज दरबार में हुआ था।

(5.) टप्पा - हिन्दी मिश्रित पंजाबी भाषा का श्रृंगार प्रधान गीत टप्पा है। यह गायन शैली चंचलता व लच्छेदार तान से युक्त होती है।

भारत में सांस्कृतिक काल से लेकर आधुनिक युग तक आते-आते संगीत की शैली और पध्दति में जबरदस्त परिवर्तन हुआ है।

प्रमुख संगीतकार -

भारतीय संगीत के इतिहास के महान संगीतकारों जैसे कि कालीदास, तानसेन, अमीर खुसरो आदि ने भारतीय संगीत की उन्नति में बहुत योगदान किया है जिसकी कीर्ति को पंडित रवि शंकर, भीमसेन गुरूराज जोशी, पंडित जसराज, प्रभा अत्रे, सुल्तान खान आदि जैसे संगीत प्रेमियों ने आज के युग में भी कायम रखा हुआ है।

कर्नाटक शैली -

भारतीय शास्त्रीय संगीत के दक्षिण भारतीय रूप को कर्नाटक संगीत के नाम से जाना जाता है और संगीत की इस शैली में कई वाद्यों को प्रयोग किया जाता है जैसे कि वायलिन, वीणा, मृंदगम आदि। कर्नाटक संगीत दक्षिण भारत के तमिलनाडु, केरल, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक रायों में प्रचलित है। कर्नाटक संगीत का विषय मुख्यत: धार्मिक भजन होते हैं। जिनमें हिन्दू देवी-देवताओं की स्तुति की जाती है। कर्नाटक शास्त्रीय शैली में रागों का गायन अधिक तेज और हिन्दुस्तानी शैली की तुलना में कम समय का होता है। त्यागराज, मुथुस्वामी दीक्षितार और श्यामा शास्त्री को कर्नाटक संगीत शैली की त्रिमूर्ति कहा जाता है, जबकि पुरंदर दास को अक्सर कर्नाटक शैली का पिता कहा जाता है। कर्नाटक शैली के विषयों में पूजा-अर्चना, मंदिरों का वर्णन, दार्शनिक चिंतन, नायक-नायिका वर्णन और देशभक्ति शामिल हैं।

शैली के प्रमुख रूप

कर्नाटक शैली के प्रमुख रूप इस प्रकार हैं-

Jio 4G VoLTE 4G airtel 1.3 K/s 8:20

शास्त्रीय संगीत का आधार

भारतीय शास्त्रीय संगीत स्वरों व ताल के अनुशासित प्रयोग पर आधारित है। सात स्वरों व बाईस श्रुतियों के प्रभावशाली प्रयोग से विभिन्न तरह के भाव उत्पन्न करने की चेष्टा की जाती है। सात स्वरों के समूह को 'सप्तक' कहा जाता है। भारतीय संगीत सप्तक के ये सात स्वर इस प्रकार हैं-

षडज (सा)
ऋषभ (रे)
गंधार (ग)
मध्यम (म)
पंचम (प)
धैवत (ध)
निषाद (नि)

'सप्तक' को मूलत: तीन वर्गों में विभाजित किया जाता है- 'मन्द्र सप्तक', 'मध्य सप्तक' व 'तार सप्तक', अर्थात सातों स्वरों को तीनों सप्तकों में गाया और बजाया जा सकता है। षड्ज व पंचम स्वर अचल स्वर कहलाते हैं, क्योंकि इनके स्थान में किसी तरह का परिवर्तन नहीं किया जा सकता और इन्हें इनके शुद्ध रूप में ही गाया बजाया जा सकता है। जबकि अन्य स्वरों को उनके कोमल व तीव्र रूप में भी गाया जाता है। इन्हीं स्वरों को विभिन्न प्रकार से गूँथ कर रागों की रचना की जाती है।

निरपवाद रूप से यह मान लिया गया है कि भारतीय संगीत के तीन रूप हैं: स्वर संगीत, वाद्य संगीत
और नृत्य। संगीत के ये तीनों माध्यम भारतीय शास्त्रीय संगीत के दो प्रमुख रूप हैं, नामत: उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत अथवा हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत, और दक्षिण भारत का शास्त्रीय संगीत अथवा कर्नाटक हिन्दुस्तानी संगीत।

हिन्दुस्तानी संगीत -

माना जाता है कि हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के इतिहास का प्रारम्भ सिंधु घाटी की सभ्यता के काल में हुआ हालांकि इस दावे के एकमात्र साक्ष्य हैं उस समय की एक नृत्य बाला की मुद्रा में कांस्य मूर्ति और नृत्य, नाटक और संगीत के देवता रूद्र अथवा शिव की पूजा का प्रचलन। सिंधु घाटी की सभ्यता के पतन के पश्चात् वैदिक संगीत की अवस्था का प्रारम्भ हुआ जिसमें संगीत की शैली में भजनों और मंत्रों के उच्चारण से ईश्वर की पूजा और अर्चना की जाती थी।

इसके अतिरिक्त दो भारतीय महाकाव्यों-रामायण और महाभारत की रचना में संगीत का मुख्य प्रभाव रहा।

ऋंगार, प्रकृति और भक्ति ये हिन्दुस्तानी शैली के प्रमुख विषय हैं।

तबला वादक हिन्दुस्तानी संगीत में लय बनाये रखने में मददगार सिद्ध

Jio 4G VoLTE 4G airtel 0 K/s 8:20
प्रमुख गायन शैलियाँ ...
m.facebook.com

प्रमुख गायन शैलियाँ

भारतीय संगीत का उद्भव वैदिक काल में हुआ। एक मान्यता के अनुसार सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा ने मानव जाति में अमन और चैन के एक नए युग का निर्माण करने के लिए विश्व को संगीत की शिक्षा देने अपने पुत्र मनीशी नारद को पृथ्वी पर भेजा। संगीत, कला का एक प्राचीनतम रूप है जो हर युग में भारतीय संस्कृति और परम्परा के वैभव को प्रतिबिम्बित करता रहा है। अपने उद्भव से लेकर आज तक संगीत को विकास की अनेक अवस्थाओं से गुजरना पड़ा है जिसने कला की सृजनात्मक भव्यता को पुन: पारिभाषित किया है। नए ऐतिहासिक और सांस्कृतिक अनुसंधानों से पता चलता है कि भारतीय संगीत ने भिन्न-भिन्न परम्पराओं और संस्कृति से जुड़े लोगों के बीच से गुजरते हुए कितना कठिन सफर तय किया है। देश की अनेक जातियों की संगीत शैलियों का मिश्रण भारत जातीय विविधता को व्यक्त करता है, जो अन्य किसी भी राष्ट्र में नहीं है। वैदिक काल के दौरान संगीत सबसे पहले मंत्रोच्चारण के रूप में शुरू हुआ था, जिनका उच्चारण एक स्वरीय गायन की पध्दति में किया जाता था, जिसका अर्थ है एक स्वर में गाना। इन मंत्रों ने शनै:शनै: 'गाथा गायन' का रूप ले लिया जो दोहरे स्वर में गायन की पध्दति है। वास्तव में वैदिक स्वर, दोहरे स्वर और ऐसी अन्य पध्दतियों में वैदिक मंत्रों के गायन से सात स्वरों की जिसे 'सप्तास्वरा' कहा जाता है, का सूत्रपात हुआ।
वैदिक काल के आधुनिक अध्ययनों से पता चलता है कि हर घर में संगीत को कला के एक उत्कृष्ट रूप में सम्मान दिया जाता था। इस संदर्भ में, गुप्तकालीन संगीत, जिसने भारतीय संगीत के विकास में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया, भारतीय संगीत के इतिहास में सदैव गुंजायमान है। भरतमुनि द्वारा रचित 'नाट्यशास्त्र', भारतीय संगीत के इतिहास का प्रथम लिखित प्रमाण माना जाता है। इसकी रचना के समय के बारे में कई मतभेद हैं। आज के भारतीय शास्त्रीय संगीत के कई पहलुओं का उल्लेख इस प्राचीन ग्रंथ में मिलता है। भरतमुनि के 'नाट्यशास्त्र' के बाद शारंगदेव द्वारा रचित 'संगीत रत्नाकर' ऐतिहासिक दृष्टि से सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रंथ माना जाता है। आधुनिक भारतीय संगीत जिसे देश में 'संगीत' के नाम से जाना जाता है, के विकास से हुए कई नए-नए परिवर्तनों ने इस कला को सरल बना दिया है।
शास्त्रीय संगीत का आधार
भारतीय शास्त्रीय संगीत स्वरों व ताल के अनुशासित प्रयोग पर आधारित है। सात स्वरों व बाईस श्रुतियों के प्रभावशाली प्रयोग से विभिन्न तरह के भाव उत्पन्न करने की चेष्टा की जाती है। सात स्वरों के